Gyansindhu Coaching Classes

Join – Whatsapp Channel By Link

Subscribe for Live Class

कक्षा 10 – हिंदी

महामैराथन क्लास

पद्यांश

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

सन्दर्भ-प्रस्तुत पंक्तियाँ **सुभद्राकुमारी चौहान** की 'झाँसी की रानी की समाधि पर' शीर्षक कविता से ली गई हैं। यह कविता उनके काव्य-संग्रह **'त्रिधारा'** से हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित की गई है।

इस समाधि में छिपी हुई है,
एक राख की ढेरी
जल कर जिसने स्वतन्त्रता की,
झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-वीर, छन्द-मुक्त, भाषा-साहित्यिक हिन्दी, गुण-ओज।

1. प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

उत्तर–उपर्युक्त

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–**व्याख्या–** इस समाधि में वीरांगना लक्ष्मीबाई की राख छिपी हुई है, जिसमें जलकर स्वतंत्रता की अलौकिक आरती उतारी थी यह छोटी सी समधि झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की है, जिन्होंने पुरुषों के समान साहस दिखाया यह समाधि रानी की अन्तिम कर्मस्थली है।

3. कवयित्री ने किसकी समाधि पर अपनी भावनाएँ व्यक्त की हैं?

उत्तर–झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की समाधि पर।

यहीं कहीं पर बिखर गई वह,
भग्न विजय-माला -सी।
उनके फूल यहाँ संचित हैं,
है यह स्मृति-शाला-सी।।

काव्यगत सौंदर्य–रस–शांत, छन्द–मुक्त, अलंकार–उपमा, भाषा–साहित्यिक खड़ी बोली हिन्दी, गुण–प्रसाद।

4. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

उत्तर– उपर्युक्त

5. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर–**व्याख्या**– सुश्री सुभद्राकुमारी चौहान जी कहती हैं कि यह वह स्थान है जहाँ टूटी हुई माला के फूलों के समान झाँसी की रानी बलि हो गयी। यहीं पर उनकी अस्थियाँ एकत्र हैं यह उनका स्मृति भवन है।

6. **'भग्न विजय–माला–सी' में कौन–सा अलंकार है?**

उत्तर– उपमा अलंकार।

सहे वार पर वार अन्त तक,
लड़ी वीर बाला सी।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर
चमक उठी ज्वाला सी।।
बढ़ जाता है मान वीर का,
रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की,
भस्म यथा सोने से।
रानी से भी अधिक हमें अब, यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की, आशा की चिनगारी।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-वीर, छन्द-मुक्त, अलंकार-अनुप्रास, उपमा, भाषा-खड़ी बोली हिन्दी, गुण-ओज।

1. उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-**व्याख्या-** अग्रेजों के साथ युद्ध करते हुए अपनी अन्तिम सांस तक वह आघात पर आघात सहती रही और वीरांगना की भाँति लड़ती रही। अन्त में रानी लक्ष्मीबाई स्वत्रंत्रता के यज्ञ में उसी प्रकार अपनी बलि दे दी जिस प्रकार यज्ञ में पवित्र आहुतियाँ दी जाती हैं। उनके बलिदान से उनकी यश-ज्वाला और अधिक प्रकाशित हो गयी। कवयित्री कहती है कि युद्ध क्षेत्र में अपना बलिदान करने पर वीर पुरूष का सम्मान उसी तरह बढ़ जाता है, जैसे सोने की तुलना में स्वर्ण भस्म का मूल्य अधिक होता है। निश्चित रूप से रानी लक्ष्मीबाई से हम प्यार करते हैं, परन्तु यह समाधि हमें रानी से भी अधिक प्रिय है, क्योंकि यहाँ स्वतंत्रता की आशा की चिनगारी रखी गयी है।

3. एक वीर का सम्मान किससे बढ़ जाता है?

उत्तर – रण में बलिदान होने से एक वीर का सम्मान बढ़ जाता है।

4. कवि को रानी से भी अधिक रानी की समाधि क्यों प्यारी है?

उत्तर – कवि को रानी से भी अधिक रानी की समाधि इसलिए प्यारी है क्योंकि इस समाधि में स्वतन्त्रता रूपी आशा की चिनगारी रखी गयी है।

इससे भी सुन्दर समाधियाँ,
हम जग में है पाते।
उनकी गाथा पर निशीथ में,
क्षुद्र जंतु ही गाते ।।
पर कवियों की अमर गिरा में,
इसकी अमिट कहानी।
स्नेह और श्रद्धा से गाती
है, वीरों की बानी।।

बुंदेले हरबोलों के मुख,
हमने सुनी कहानी।
खूब लड़ी मरदानी वह थी,
झाँसी वाली रानी।।
यह समाधि, यह चिर समाधि-
है, झाँसी की रानी की।
अंतिम लालास्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-वीर, छन्द-मुक्त, अलंकार-अनुप्रास, उपमा,:पक तथा दृष्टान्त भाषा-सरल खड़ी बोली हिन्दी, गुण-ओज, प्रसाद।

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

उत्तर- उपर्युक्त

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-व्याख्या-इस समाधि से भी बढ़कर हमें संसार में समाधियाँ मिलती हैं। भले ही वे सुन्दर हैं, महान हैं, विशाल हैं परन्तु रात्रि के समय ही उनका झींगुर, छिपकली उनमें चहलकदमी करके उनका यशोगान करते हैं, जबकि 'झाँसी की रानी' की समाधि का यशोगान कवियों की अमरवाणी द्वारा होता है जिसमें श्रद्धा रहती है, स्नेह रहता है। इस तरह रानी का यशोगान कवियों की कृतियों में हमेशा-हमेशा के लिए अमर रहेगा और जिसका गान वीर-पुरुष बराबर करते रहेंगे। बुंदेलखण्ड के भाटों, वहाँ के लोगों द्वारा हमें बताया गया कि रानी ने 'झाँसी' में अंग्रेजों से जमकर लोहा लिया था और लड़ते-लड़ते अपने प्राण न्योछावर कर दिये थे। इस प्रकार यह भूमि बहादुर रानी की अन्तिम लीला-स्थली बनी।

3. संसार की अन्य समाधियों एवं झांसी की रानी की समाधि में क्या अन्तर है?

उत्तर- हमें संसार में अनेक सुन्दरतम समाधियाँ मिलती हैं। परन्तु रात्रि के समय ही उनका झींगुर, छिपकली उनमें चहलकदमी करके उनका यशोगान करते हैं, जबकि 'झाँसी की रानी' की समाधि का यशोगान कवियों की अमरवाणी द्वारा होता है जिसमें श्रद्धा रहती है, स्नेह रहता है।

4. निशीथ एवं गिरा शब्द का अर्थ लिखिए।

उत्तर-निशीथ-मध्यरात्रि, गिरा-वाणी।

5. पद्यांश में प्रयुक्त शब्द 'छुद्र'-जन्तु से क्या आशय है?

उत्तर-'छुद्र'-जन्तु से आशय छिपकली, झींगुर आदि छोटे-छोटे जन्तुओं से है।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित **'भारत माता का मन्दिर यह'** शीर्षक कविता से ली गई हैं। इसके रचयिता **मैथिलीशरण गुप्त** जी हैं।

नहीं चाहिए बुद्धि बैर की
भला प्रेम का उन्माद कहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ।
सब तीर्थों का एक तीर्थ यह
हृदय पवित्र बना लें हम
आओ यहाँ अजातशत्रु बन,
सबको मित्र बना लें हम।

काव्यगत सौंदर्य–रस–शांत छन्द–मुक्तक, अलंकार–अनुप्रास, भाषा–सरल खड़ी बोली हिन्दी, गुण–प्रसाद।

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

उत्तर–उपर्युक्त

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-व्याख्या-गुप्त जी कहते हैं कि भारत माँ के मन्दिर में किसी प्रकार का कोई बैर नहीं है। सभी लोग परस्पर मिल-जुलकर रहते हैं। यहाँ किसी भी प्रकार का कोई उन्माद नहीं है। इस देश में सबका समान हित है। सभी की मुरादें पूरी होती हैं। भारत देश सभी तीर्थों का एक तीर्थ है। इस तीर्थ में आकर हम अपने मन को पवित्र बना लें। अजातशत्रु का अभिप्राय है जिसका कोई शत्रु न पैदा हुआ हो। गुप्त जी कहते हैं कि हम अजातशत्रु बनकर सभी को अपना मित्र बना लें और सभी से प्रेम कर ले।

3. भारत देश किस प्रकार का तीर्थ है?

उत्तर- भारत देश सभी तीर्थों का एक तीर्थ है। इस तीर्थ में आकर हम अपने मन को पवित्र बना लेते हैं।

बैठो माता के आँगन में
नाता भाई-बहन का

समझे उसकी प्रसव वेदना
वही लाल है माई का
एक साथ मिल बाँट लो
अपना हर्ष विषाद यहाँ है,
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

काव्यगत सौंदर्य- रस-शांत छन्द-मुक्तक, भाषा-सरल खड़ी बोली हिन्दी, गुण-प्रसाद।

4. प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
   उत्तर-उपर्युक्त
5. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर-व्याख्या- मैथलीशरण गुप्त जी कहते हैं कि भारत माता के आँगन में बैठकर आपस में भाई-बहन का रिश्ता रखें एक माँ का अच्छा लाल वही हो सकता है, जो उसकी प्रसव पीड़ा को

समझे एक दूसरे के कष्टों को समझे। हमें एक दूसरे का सुख दुःख समझना चाहिए और उसे बाँटना भी चाहिए। यही हमारा मूलमंत्र भी होना चाहिए। भारत माता के इस मन्दिर में सभी का कल्याण हो सभी की इच्छाएँ पूरी हों।

6. भारत माता के आँगन में बैठकर लोग क्या करें?

उत्तर- भारत माता के विस्तृत आँगन में बैठकर सभी व्यक्ति बन्धुत्व की भावना स्थापित करें।

7. हमारा मूल मंत्र क्या होना चाहिए?

उत्तर-दूसरे के सुख में सुखी और दूसरे के दुःख में दुखी यही हमारा मूल मंत्र होना चाहिए।

मिला सेव्य का हमें पुजारी
सकल काम उस न्यायी का

मुक्ति लाभ कर्तव्य यहाँ है
एक एक अनुयायी का
कोटि-कोटि कंठों से मिलकर
उठे एक जयनाद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

काव्यगत सौंदर्य-रस-शांत छन्द-मुक्तक, अलंकार-अनुप्रास, भाषा-सरल खड़ी बोली हिन्दी, गुण-प्रसाद।

1. **प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**
   उत्तर-उपर्युक्त
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर-**व्याख्या-** गुप्तजी कहते हैं कि हमें एक ऐसा सेव्य पुजारी मिला जिसका कार्य न्याय का ही है भारत में रहने वाले एक-एक अनुयायी का परम कर्त्तव्य है कि सभी को लाभ पहुँचायें। तथा

मुक्ति लाभ प्राप्त करें। किसी को पीड़ा ना पहुँचायें। यही हमारा परम कर्त्तव्य है। यहाँ करोड़ों कंठों से मिलकर जयनाद की ध्वनि गूँजती है। इससे स्पष्ट होता है कि यहाँ रहने वाले सभी लोगों का कल्याण है। सभी को वांछित फल की प्राप्ति होती है।

3. **'कोटि-कोटि कंठों से मिलकर' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है? स्पष्ट कीजिए।**
   उत्तर-अनुप्रास अलंकार है।
4. **भारत में करोड़ों कंठो से किस प्रकार की ध्वनि गूँजती है?**
   उत्तर-व्याखा-भारत में करोड़ों कंठों से मिलकर जयनाद की ध्वनि गूँजती है।

सन्दर्भ- प्रस्तु पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के हिन्दी **'काव्यखण्ड'** के **'नदी'** शीर्षक से उद्धृत है। इसके रचयिता **केदारनाथ सिंह** हैं।

अगर धीरे चलो
वह तुम्हें छू लेगी
दौड़ो तो छूट जायेगी नदी
अगर ले लो साथ
वह चलती चली जायेगी कहीं भी
यहाँ तक-कि कबाड़ी की दुकान तक भी

काव्यगत सौंदर्य-रस-शांत, छन्द-मुक्तक, अलंकार-अनुप्रास, मानवीकरण, भाषा-सरल खड़ी बोली हिन्दी, गुण-प्रसाद।

1. **प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**
   उत्तर- उपर्युक्त
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर-**व्याख्या–** कवि मानव जीवन में नदी का महत्त्व बताते हुए कहता है कि अगर हम संसार के साथ सामान्य गति से चलते हैं तो नदी भी हमारे साथ हमें स्पर्श करके चलती है। यदि कोई व्यक्ति आधुनिकता की दौड़ में संस्कृति को अनदेखा कर देता है तो यह नदी उससे दूर हो जाती है। यदि संस्कृति के साथ-साथ चलता है तो नदी भी उसका अनुसरण करती है। व्यक्ति उसे किसी भी स्थान पर ले जाए यहाँ तक की कबाड़ी की दुकान जैसे सामान्य स्थान पर, वहाँ भी उसके साथ चलती चली जायेगी।

3. **उपर्युक्त पद्यांश में कवि नदी के माध्यम से किसके बारे में बात कर रहा है?**

उत्तर-कवि नदी के माध्यम से संस्कृति के बारे में बात कर रहा है।

छोड़ दो
तो वहीं अँधेरे में

करोड़ों तारों की आँख बचाकर
वह चुपके से रच लेगी
एक समूची दुनिया
एवं छोटे-सेघोंघे में
सचाई यह है
कि तुम कहीं भी रहो
तुम्हें वर्ष के सबसे कठिन दिनों में भी
प्यार करती है एक नदी।

काव्यगत सौंदर्य-रस-शांत छन्द-मुक्तक, अलंकार-अनुप्रास, मानवीकरण, भाषा-सरल खड़ी बोली हिन्दी, गुण-प्रसाद।

1. प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर-उपर्युक्त

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–**व्याख्या**–कवि कहते हैं कि यदि मनुष्य अपनी सभ्यता और संस्कृति से दूरी बनाता है, थोड़े समय के लिए भी उससे दूर होता है या अलग हो जाता है, तो वह सारे समाज से अलग हो जाता है। यह सभ्यता और संस्कृति अजर-अमर है, जो किसी-न-किसी रूप में हमेशा जीवित रहती है। यदि इसका थोड़ा-सा भी अंश कहीं छूट जाता है, तो यह विपरीत परिस्थितयों का सामना करने के लिए अपना विकास कर लेती है। अपने अस्तित्वरूपी बीज बचाए रखने के लिए इसे घोंघे जितना कम स्थान चाहिए। उसी थोड़े से स्थान में पल बढ़ कर संस्कृति अपना विकास कर लेती है। नदी अर्थात् सभ्यता और संस्कृति जीवन के सबसे कठिन समय में भी हमारा साथ नहीं छोड़ती है। जब कभी दानवी प्रवृत्तियाँ मानवता पर आक्रमण करती हैं, तब भी सभ्यता और संस्कृति अपने आपको बचाए रखती है और मनुष्य का साथ नहीं छोड़ती है। यह मनुष्य को बहुत प्यार करती है, तभी तो अपने से बाँधे रखकर उसे अपने से अलग नहीं होने देती।

3. आँख के दो पर्यायवाची लिखिए।

उत्तर- नेत्र, नयन

सन्दर्भ-प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक हिन्दी के काव्यखण्ड में संकलित **'भाषा एक मात्र अनन्त है'** नामक शीर्षक कविता से ली गई हैं। इसके रचयिता आधुनिक कवि **'अशोक वाजपेयी'** जी हैं।

भाषा एक मात्र अनन्त है
फूल झरता है
फूल शब्द नहीं!
बच्चा गेंद उछालता है,
सदियों के पार
लोकती है उसे एक बच्ची!
बूढ़ा गाता है एक पद्य,
दुहराता है दूसरा बूढ़ा,
भूगोल और इतिहास से परे।

काव्यगत सौंदर्य–रस–शांत, छन्द–मुक्त, अलंकार–अनुप्रास, उपमा,:पक तथा दृष्टान्त भाषा–सरल खड़ी बोली हिन्दी, गुण– प्रसाद।

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

   उत्तर– उपर्युक्त

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

   उत्तर–**व्याख्या**– कविवर अशोक वाजपेयी जी कहते हैं कि टहनियों में फूल खिलता है और परिपक्व होकर नीचे गिरकर सूख जाता है। इसलिए शब्द से फूल की तुलना नहीं की जा सकती है। शब्द सदैव

   अर्थवान बने रहते हैं। इसी तरह संसार में अनेक कार्य सम्पन्न होते हैं, किन्तु वे सब सीमित काल के होते हैं। जैसे एक बच्चा गेंद उछालता है, यह कार्य सैकड़ों वर्षो से होता आ रहा है।एक बच्ची गेंद को अपने हाथों में लपक लेती है। यह परम्परा चलती आ रही है। ये सब कार्य हैं और होते आ रहे हैं।एक वृद्ध व्यक्ति परम्परा से गीत गा रहा है। वृद्ध हो रहे लोग

उसे दुहराते चले आ रहे हैं। सब लोग जो वृद्ध हो रहे हैं अपनी दालान में बैठे यह कार्य जो इतिहास और भूगोल से सम्बन्धित नही, निरन्तर दुहराये जाते हैं। सभी जन्म लेने वाले मनुष्य बच्चे से वृद्ध होकर समाप्त होते जा रहे हैं। भविष्य में न बच्चा रहेगा और न वृद्ध व्यक्ति, न गेंद रहेगा, न फूल सुरक्षित रहेगा और न ही दालान सुरक्षित रहेगा, सब समाप्त हो जायेंगे। किन्तु शब्द, भाषा तो चिरजीवी हैं, वे सदैव अस्तित्ववान बने रहेंगे। ये कभी समाप्त नहीं होंगे।

3. कवि पद्यांश में किसकी विशेषता बता रहा है?

उत्तर–कवि पद्यांश में 'भाषा' की विशेषता बता रहा है।

4. 'दालान' और 'लोकती' शब्दों का अर्थ लिखिए।

उत्तर– **दालान–** बरामदा

लोकती– देखती।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

सन्दर्भ-प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक हिन्दी के काव्यखण्ड में संकलित **'हल्दीघाटी'** नामक शीर्षक कविता से ली गई हैं। इसके रचयिता आधुनिक कवि **'श्यामनारायण पाण्डेय'** जी हैं।

मेवाड़-केसरी देख रहा,
केवल रण का न तमाशा था।
वह दौड़-दौड़ करता था रण,
वह मान-रक्त का प्यासा था।।
चढ़कर चेतक पर घूम-घूम,
करता सेना रखवाली था।
ले महामृत्यु को साथ-साथ,
मानो प्रत्यक्ष कपाली था।।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

काव्यगत सौंदर्य- रस-वीर, छन्द-मुक्त, अलंकार-अनुप्रास, श्लेष, उत्प्रेक्षा, पुनरुक्तिप्रकाश तथा अतिशयोक्ति, भाषा-सरल खड़ी बोली हिन्दी, गुण- ओज।

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर-उपर्युक्त
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर-**व्याख्या**- हल्दीघाटी के युद्ध में मेवाड़ केसरी अर्थात् राणा प्रताप केवल युद्ध का तमाशा ही नहीं देख रहे थे, अपितु वह दौड़-दौड़कर इस प्रकार युद्ध कर रहे थे मानो वह शत्रु सेना का नेतृत्व करने वाले मानसिंह के रक्त के प्यासे हों। राणा प्रताप अपने घोड़े चेतक पर सवार होकर अपनी सेना की रखवाली करते हुए इस प्रकार युद्ध कर रहे थे जैसे मानो अपने साथ मृत्यु का प्रलयंकारी भीषण रूप लिए साक्षात् महाकाल युद्धभूमि में आ धमका हो।
3. **प्रस्तुत पद्यांश में मेवाड़ केसरी किसे कहा गया है?**
   उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश में मेवाड़ केसरी महाराणा प्रताप को कहा गया है ।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

4. 'कपाली' तथा 'मेवाड-केसरी' का क्या अर्थ है?

उत्तर –**'कपाली'** का अर्थ- महाकाल, शिव, 'महादेव' अथवा भैरव है ।

मेवाड़ केसरी- मेवाड़ का सिंह (राणाप्रताप)

चढ़ चेतक पर तलवार उठा,
रखता था भूतल पानी को।
राणा प्रताप सिर काट-काट
करता था सफल जवानी को।।
सेना-नायक राणा के भी,
रण देख देखकर चाह भरे।
मेवाड़ सिपाही लड़ते थे
दूने तिगुने उत्साह भरे।।

काव्यगत सौंदर्य–रस–वीर, छन्द–मुक्त, अलंकार– श्लेष, पुनरूक्तिप्रकाश तथा अतिशयोक्ति भाषा–सरल खड़ी बोली हिन्दी, गुण– ओज।

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर–उपर्युक्त
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर–**व्याख्या–** जब राणाप्रताप युद्धभूमि में तलवार उठाकर चेतक पर सवार होकर युद्ध करते थे तो ऐसा प्रतीत होता था मानो वह अपने अन्दर भूतल में स्थित पानी अर्थात् असीम शौर्य को धारण कर रहे हों। वह ऐसा पराक्रमी वीर था जो शत्रु सेना के सिर काट–काटकर अपनी जवानी का वास्तविक परिचय देता था। अर्थात् अपनी जवानी के कारण सफलता भी प्राप्त कर रहे थे। राणा प्रताप की सेना के कुशल सैनिक राणा प्रताप का रण कौशल देख–देखकर और भी उत्साहित होकर युद्ध कर रहे थे। वे राणा प्रताप के पराक्रम को देखकर दोगुने–तिगुने उत्साह के साथ युद्ध कर रहे थे।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

3. राणा प्रताप अपनी जवानी को किस प्रकार सफल कर रहा था?

उत्तर –शत्रुओं के शिरों को काट-काट कर राणा प्रताप अपनी जवानी को सफल कर रहा था।

4. प्रस्तुत पद्यांश में 'चेतक' कौन है?

उत्तर- चेतक महाराणा प्रताप का घोड़ा है ।

क्षण मार दिया कर कोड़े से,
रण किया उतर करघोड़े से।
राणा रण कौशल दिखा-दिखा,
चढ़ गया उतर करघोड़े से।
क्षण भीषण हलचल मचा-मचा,
राण-कर की तलवार बढ़ी।
था शोर रक्त पीने का यह
रण चण्डी जीभ पसार बढ़ी।।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

काव्यगत सौंदर्य– रस–वीर, छन्द–मुक्त, अलंकार–उत्प्रेक्षा तथा अतिशयोक्ति, भाषा–सरल खड़ी बोली हिन्दी, गुण– ओज।

1.'रणचण्डी' का अर्थ लिखिए।

उत्तर– युद्धभूमि की देवी (महाकाली)

2.रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर– व्याख्या–राणा प्रताप इस तरह युद्ध कर रहा था कि कहीं वह शत्रु सेना में हाथ के कोड़े से हमला कर देता तो कहीं,घोड़े से उतरकर युद्ध करने लगता था। उसका घोड़े से कहीं उतरकर और कहीं चढ़कर युद्ध करना देखते बनता था। राणा प्रताप युद्ध स्थल में अपनी तलवार से शत्रु सेना पर जिस ओर हमला कर देता वहीं हाहाकार मच जाता था। शत्रु सेना में इस तरह शोर मच रहा था मानो वहाँ राणा प्रताप नहीं, बल्कि स्वयं महाकाली खड्ग लेकर रक्त पीने के लिए अपनी जीभ पसारकर बढ़ रही हो।

3.प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त

वह हाथी दल पर टूट पड़ा,
मानो उस पर पवि छूट पड़ा।
कट गई वेग से भू, ऐसा
शोणित का नाला फूट पड़ा।।
जो साहस कर बढ़ता उसको,
केवल कटाक्ष से टोक दिया।
जो वीर बना नभ-बीच फेंक,
बरछे पर उसको रोक दिया।।

काव्यगत सौंदर्य- रस-वीर, छन्द-मुक्त, अलंकार-उत्प्रेक्षा, अनुप्रास, उपमा तथा अतिशयोक्ति, भाषा-सरल खड़ी बोली हिन्दी,

1. उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त।

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- **व्याख्या**- कवि कहता है कि राणा प्रताप शत्रुसेना के हाथी दल पर इस भाँति हमला करता था कि मानों पूर्ण वेग से भाले का वार किया गया हो और उसके वेग से हाथी दल से इस भाँति लहू की धारा फूट पड़ी जैसे भूमि भाले के प्रहार से फट पड़ी हो और उससे जल का वेगपूर्ण नद-सा फूट पड़ा हो। यदि कोई शत्रु राणा पर वार करने के लिए साहस करके आगे बढ़ता तो वह केवल राणा की तिरछी निगाह के मात्र से ही वहीं का वहीं रुक जाता था और यदि कोई शत्रु सैनिक हमला भी कर देता तो राणाप्रताप उसे नभ के बीचोंबीच हवा में ही अपने भाले से रोक देता था।

3. 'पवि' अथवा 'कटाक्ष' शब्दों के अर्थ लिखो?

उत्तर - **पवि**- भाला/वज्र

कटाक्ष- वक्र दृष्टि अथवा तिरछी निगाह।

क्षण उछल गया अरि घोड़े पर
क्षण लड़ा सो गया घोड़े पर।
वैरीदल से लड़ते-लड़ते
क्षण खड़ा हो गया घोड़े पर।।
क्षण भर में गिरते रुण्डों से,
मदमस्त गजों के शुण्डों से।
घोड़ों के विकल वितुण्डों से,
पट गई भूमि नरमुण्डों से।।

काव्यगत सौंदर्य- रस-वीर, छन्द-मुक्त, अलंकार-पुनरूक्तिप्रकाश तथा अतिशयोक्ति, भाषा-सरल खड़ी बोली हिन्दी,

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

   उत्तर–उपर्युक्त

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

   उत्तर–व्याख्या– यदि कोई शत्रु राणा प्रताप पर हमला करने के लिए उठा भी तो वह वहीं धराशायी हो गया अर्थात् राणा प्रताप द्वारा उसे घोड़े पर ही ढेर कर दिया गया। राणा प्रताप शत्रु सेना से लड़ते-लड़ते कभी-कभी अपने घोड़े पर खड़ा भी हो जाता, इस प्रकार प्रचंड शत्रुओं के विशाल दलों को वह खदेड़-खदेड़ उन पर हमला करता था। राणाप्रताप के हमले से थोड़ी देर में युद्धभूमि शत्रुओं के गिरते हुए धड़ों, से मदमस्त हाथियों की सूँडों से,घोड़ों की भयंकर विकलता से, हाथियों से तथा नरमुण्डों से पटी हुई दिखाई पड़ रही थी।

3. युद्धभूमि किससे पट गयी थी?

उत्तर- शत्रुओं के गिरते हुए धड़ों से, मदमस्त हाथियों की सूँडों से,घोड़ों की भयंकर विकलता से, हाथियों से तथा नरमुण्डों से पट गयी थी।

4. 'रुण्ड तथा वितुण्ड के अर्थ लिखिए।

उत्तर- **रुण्ड**-शिर विहीन शरीर, **वितुण्ड**-हाथी।